परियोजना संवाद पत्र

जून-जुलाई 2023 | अंक-9

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्तपोषित)

भीतर :

- मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से
- स्वयं सहायता समूह "ज्योति" की सफलता की कहानी
- दुर्गा स्वयं सहायता समूह की महिलाएँ आत्मनिर्भरता की ओर
- टौर की पत्तल से हुई महिलाओं की आर्थिकी में सुधार
- चीड़ बना आय का साधन: भारती माता स्वयं सहायता समूह
- बादू बाड़ा देव समूह: टौर बना आय का साधन
- चौपाल वन मंडल में जल सरक्षण के कार्य
- वन मंडल सुकेत में सामुदायिक भवन का निर्माण
- नाचन वन मण्डल में हो रहे आजीविका वर्धन कार्य
- संस्थागत विकास एवं सूक्ष्म योजना
- आजीविका घटक के तहत व्यावसायिक योजनाओं का निर्माण
- गवर्निंग बॉडी बैठक
- आयोजित बैठकें/कार्यशालाऐं/प्रशिक्षण कार्यक्रम
- मीडिया में प्रोजेक्ट की गतिविधियाँ

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका वानिकी परियोजना टुटू, शिमला–11 हिमाचल प्रदेश
दूरभाष: 0177-2838217, ई० मेल: cpdjica2018hpfd@gmail.com वेबसाइट: https://jicahpforestryproject.com

मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से...

-जाइका की यात्रा : सफलता की कहानी-

JICA वानिकी परियोजना का 9वां परियोजना संवाद पत्र आपको सौंपते हुए मुझे हर्श हो रहा है। हिमाचल प्रदेश में जाइका की यात्रा और परियोजना के माध्यम से हो रहे जनकल्याण कार्यों की सफलता की कहानी के बारे इस त्रैमासिक पत्रिका में लेखकों ने बखूबी बताया है। परियोजना क्षेत्रों में होने वाले जनकल्याण एवं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से हिमाचल के ग्रामीण इलाकों में स्वारोजगार से सशक्त हो रही महिलाओं की कहानी के बारे में भी लेखकों ने अवगत करवाया है। जाइका परियोजना जन–जन तक पहुंचे यही हमारी कोशिश निरंतर रहती है। वर्ष 2018 से शुरू हुई इस यात्रा की सफलता के बारे में आप इसी से अंदाजा लगा सकते हैं कि हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना को राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला की मेजबानी करने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसमें JICA वित्तपोषित एनआरएम व वानिकी परियोजनाओं के समूचे भारतवर्ष के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य परियोजना क्षेत्रों में सतत वन प्रबंधन द्वारा वन पारिस्थितिकी तंत्र को सुधार करना है। इसके अतिरिक्त परियोजना का लक्ष्य जैव विवधता का संरक्षण, ग्रामीण लोगों की आजीविका में सुधार और संस्थागत क्षमता को बढ़ावा देना है, जिससे प्रदेश के पर्यावरण का संरक्षण एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सके।

इस परियोजना के तहत हिमाचल प्रदेश में कुल 460 सूक्ष्म योजनाएं और 920 स्वयं सहायता समूहों को शामिल किया जा रहा है। अभी तक हम 438 सुक्षम विकास योजनाओं व 691 स्वयं सहायता समूहों के व्यावसाय योजना तैयार कर चुके हैं। इन सभी को चरणवद्ध तरीके से कार्यान्वयन किया जा रहा है। परियोजना के अंतर्गत आर्थिकी में सुधार के लिए स्वयं सहायता समूहों द्वारा लगभग 24 आय सृजन गतिविधियां चलाई जा रही हैं जिनमें मुख्यतः मशरुम उत्पादन, हथकरघा, चीड़ की पत्तियों से बने सजावटी उत्पाद, सीरा, सेपू बड़ी, टौर की पत्तलें इत्यादी हैं। इन सब प्रयासों को परियोजना के कर्मठ व परिश्रमी कर्मचारियों द्वारा सिरे चढ़ाया जा रहा है। जाइका वानिकी परियोजना प्रदेश के हरित आवरण व वन आश्रित समाज की आजीविका में वृद्धि के लिए कृतसंकल्प है।

मैं परियोजना में कार्यरत सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का धन्यवाद करना चाहता हूं और आशा करता हूं कि वे इसी मनोबल के साथ परियोजना को सफल बनाने में योगदान देते रहेंगे।

धन्यवाद।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया (भा. व. से.)
अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका

जाइका से स्वरोजगार की "ज्योति"

आचार और चटनी के उद्यम में शामिल होकर खाली समय का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है। आचार और चटनी का उत्पादन श्रम और प्रबंधन गहन है। बेरोजगार ग्रामीण युवाओं, स्वयं सहायता समूहों, कृषि महिलाओं के लिए एक आकर्षक व्यवसाय बन सकता है, जो आशाजनक और अच्छे रिटर्न दे रही हैं और एक अतिरिक्त आय स्रोत है।

पार्वती वन मंडल शमशी की ग्राम वन विकास समिति बशोना, बैच–II हुरला परिक्षेत्र के एक स्वयं सहायता समूह "ज्योति" ने आचार और चटनी बनाकर और बेच कर के अपनी आजीविका बढ़ाई और जाइका वानिकी परियोजना द्वारा दी गई सहायता और प्रशिक्षण से आचार और चटनी बनाकर अच्छा मुनाफा कमाकर, एक उदाहरण पेश किया है। गठन के दौरान पार्वती वन मंडल, शमशी के परियोजना कर्मचारियों ने स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के साथ लगातार बैठकें की और उनकी सहमति से आचार और चटनी का व्यवसाय उनकी आय सृजन गतिविधि के रूप में चुना गया। स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने कृषि विज्ञान केंद्र बजौरा से प्रशिक्षण लिया और प्रशिक्षण का सारा खर्च जायका परियोजना द्वारा वहन किया गया और कुल पूंजीगत लागत का 75% भी परियोजना द्वारा सहायता के रूप में दिया गया है। इसके अलावा यदि समूह को अपने उत्पादन में तेजी लाने के लिए ऋण की आवश्यकता होती है, तो समूह को परियोजना द्वारा सीड मनी के रूप में 1 लाख रुपये भी दिए गए ताकि वे उसकी सहायता से कचामाल लेने के लिए ऋण ले सकें, जिसमें 5% ब्याज भी परियोजना द्वारा वहन किया जाएगा।

समूह के सदस्यों ने कृषि विज्ञान केंद्र बजौरा में आचार और चटनी बनाने का प्रशिक्षण लिया। पहले चक्र में समूह ने गोभी, आलू, लहसुन और मिक्स सब्जी का आचार बनाया और अगले चक्र में बीदाना, गलगल और लींगड़ का आचार भी बनायेंगे। समूह ने प्रशिक्षण के तुरंत बाद ही गोभी, लहसुन, आलू और मिक्स सब्जी का आचार बनाया और चार माह में ही 75000 रुपये का आचार बेचकर अच्छी कमाई की है। अच्छी पैकेजिंग और लेबलिंग के साथ आने वाले समय में जिले के बाहर भी इस आचार को अच्छे दाम में बेचने के लिए भेजा जायेगा।

–विषय वस्तु विशेषज्ञ (वानिकी और जैवविविधता)
–वन मंडल पार्वती–

आत्मनिर्भरता की राह पर दुर्गा स्वयं सहायता समूह

महिला शक्ति का परचम दिखाना है महिलाओं को आगे बढ़ाना है।

उतर भारत में स्थित एक सुन्दर सा राज्य हि0प्र0 जो कि हरियाली और अपनी सुन्दरता के नाम से जाना जाता है। इस राज्य के कुछ जिलों में जाइका अन्तराष्ट्रीय सहयोग एजेन्सी द्वारा महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने के लिए स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया, उसी में एक जिला है कुल्लू जिसमें एक छोटी सी पंचायत शिलीराजगिरि के अन्तर्गत एक उप समिति वाखली का गठन हुआ।

इस उपसमिति के अन्तर्गत महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए दो स्वयं सहायता समूह सरस्वती और दुर्गा का गठन साल 2020 में अगस्त माह में किया गया, समूह का नाम माता सरस्वती जो एक ज्ञान की देवी है और माता दुर्गा जो कि शक्ति का रूप है, उनके नाम पर रखा गया। इन समूहों में प्रधान, सचिव, कोषाध्यक्ष, उप प्रधान, जैसे पद नियुक्त किए गए हैं। जिसमें सभी महिलाएँ हर माह अपनी मासिक बैठक कर मासिक चंदा इक्टठा करती हैं।

बनाना है, आत्मनिर्भरता के लिए पहला कदम है। आय अर्जित करना जिसके लिए माहिलाओं ने स्वैच्छिक रूप से बैठक में प्रस्ताव पारित करके खडियों में बुनाई के कार्य को चुना। परियोजना द्वारा माहिलाओं को 75% का अनुदान खडियाँ खरीदने के लिए दिया गया। उसके साथ महिलाओं को 100000/– रूपये का रिवोलविंग फन्ड दिया गया। इसके अतिरिक्त महिलाओं को 45 दिनों का परीक्षण दिया गया।

इस परीक्षण को परियोजना द्वारा निशुल्क करवाया गया। इस परीक्षण में महिलाओं ने हिमाचल की साँस्कृतिक पहनावा जैसे की पटटू, शाल, सटौल, टोपी के बार्डर बनाना सीखा। महिलाएँ अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी से समय निकाल कर कड़ी मेहनत कर कार्य कर रही है। इन महिलाओं की मेहनत भी रंग लाई जिसमें दोनों स्वयं सहायता समूह की महिलाओ ने अभी तक रूपये 100000/–रूपये का लाभ प्राप्त हुआ। जिसमें से कुछ हिमाचली टोपी के बार्डर और शाल बेचना शेष है।

आय सृजन गतिविधि का लाभ बैंक खाते में जमा किया जाता है। उसके बाद महिलाओं द्वारा स्वयं उसका हिसाब किया जाता है। महिलाऐं आपस में नाम मात्र दर पर आंतरिक ऋण का लेन देन करती है। जिसे समूह की सभी महिलाओं को उनकी जरूरत के समय दिया जाता है और तय सीमा पर वापिस किया जाता है। इन समूहों के गठन के बाद महिलाएं अपना जीवन स्वाभिमान के साथ जी रही है।

इन महिलाओं को देख कर गाँव की अन्य महिलाएं भी समूह के साथ जुड़ने की इच्छुक है ।

मैं भी छू सकती हूँ आकाश
बस मुझे भी एक मौके की तलाश

इसी हौंसलें के साथ समूह की सभी महिलाएं आत्म निर्भर बनकर आकाश की ऊँचाईयाँ छूने को तैयार हैं।

–प्रिया, विषय वस्तु विशेषज्ञ (वानिकी और जैवविविधता)
–वन्यजीव वन मंडल कुल्लू–

टौर की पत्तल से हुई महिलाओं की आर्थिकी में सुधार

कटौला वन रेंज की घ्राण पंचायत के बिहनधार–1 वार्ड की ग्रामीण वन विकास समिति के अंतर्गत पत्तल मेकिंग स्वयं सहायता समूह बिहनधार का गठन 29–11–2020 में हुआ है। यहाँ के लोग अपनी आजीविका पूर्ति के लिए वन संसाधनो पर निर्भर है। इस पत्तल प्लेट मेकिंग समूह में 10 सदस्य हैं। समूह के प्रधान खेम चंद और सचिव सुमित्रा देवी के अनुसार उनके बुजुर्ग पशु और भेड़– बकरियों के पालन का कार्य कई वर्षों से करते थे। पशु पालन और भेड़–बकरियों के चारे एवं छाते बनाने में टौर के पत्तों का उपयोग किया करते थे।

जंगल भी घने हुआ करते थे। पशु पालन और भेड़–बकरियों के चारे एवं छाते बनाने में टौर के पत्तों का उपयोग किया करते थे। इसके साथ साथ ग्रामीण लोगों ने पत्तल बनाने का कार्य शुरू किया और शुरू में पत्तल का इस्तेमाल गावं में आयोजित कार्यक्रमों में भोजन करवाने के लिए टौर के पत्तों से बनी पत्तलों का निर्माण करना शुरू हुआ जो की पैदल चल के मंडी बाजार में भी लाकर बेचना शुरू हुआ। सुमित्रा देवी के अनुसार ग्रामीण महिलाएँ दिन में जंगल से पत्ते लाकर पत्तल बनाए जाने लगी और पुरुष मंडी बाजार में पत्तल बेचने का कार्य करने लगे। वर्तमान में कार्यक्रमों की संख्या बढ़ गयी है और

इसकी मांग भी बहुत होती है परन्तु हाथ से बनी पत्तल ज्यादा दिन तक नहीं चलती है और जल्दी खराब हो जाती है तथा अधिक दिनों तक स्टोर नहीं की जा सकती है।

लेकिन अब जाइका द्वारा दी गई पत्तल मशीन के पत्तलों को स्टोर किया जा सकता है एवं सुखी प्लेट हल्का होने के कारण परिवहन में भी आसानी हो रही है। हर दिन लगभग 20–25 हजार पत्तल बाज़ार में बिकती हैं। प्रत्येक कार्यक्रमों में प्रति व्यक्ति 2 पत्तल लगती है। जिसमें के बहुत अधिक टौर के पत्तों की खपत को रही है और जंगल में पत्तों की संख्या कम हो रही है। मशीनी पत्ता प्लेट में 1 ही पत्तल लगती है जिसके कारण हमारे जंगलों के पत्ते भी बच रहे हैं।

विभागीय प्रदर्शिनी में लगाए गए स्टाल में पत्ता पत्तलों को प्रदर्शित किया एवं बेचा भी गया और आर्डर भी लिए गए हैं।

अभी तक आर्डर पर हमने 45000 हजार पत्तलों और 10000 डोने बना के बेचे हैं। जिसमें हमें लगभग 150000 रु तक आमदनी प्राप्त हो चुकी है। समूह के प्रधान खेम चंद का कहना है की यह हमारे लिए बहुत बड़ी उप्लब्धि है। इससे हमारे आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में जागरुकता आई है और आत्मविश्वास भी बढ़ा है और समूह की महिलायों का सशक्तीकरण भी हो रहा है।

–प्रोमिला ठाकुर,
क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक, कटौला
–वन मंडल मण्डी–

चीड़ की पत्तियों से सशक्त होती महिलाए

यह कहानी हिमाचल प्रदेश के मंडी जिला के वन वृत्त मंडी के वन मंडल मंडी के वन परिक्षेत्र कटौला व वन विकास खंड कटौला के नेरी निशु बीट के "ग्राम वन विकास समिति" निशु पार्नु के भारती स्वंय सहायता समूह की है।

इस वार्ड का नाम निशु पार्नु है जो की यहाँ के प्रसिद्ध देवी निशु पराशरी जी के नाम से पड़ा है।

भारती स्वंय सहायता समूह का गठन ब्लॉक द्वारा किया गया था। परन्तु इस समूह के सदस्यों को कोई भी प्रशिक्षण नहीं दिया गया था जिसमें 9 महिलाएं हैं। लेकिन अब परियोजना की ओर से इनका सशक्तिकरण किया जा रहा है।

11–05–2022 को भारती स्वंय सहायता समूह के कुछ सदस्यों को परियोजना की ओर से सरस मेला पालमपुर में बाहरी भ्रमण के लिए भेजा गया जहाँ प्रदर्शिनी में विभिन्न स्वंय सहायता समूहों द्वारा बनाये गए उत्पादों को देखा जहाँ प्रदर्शिनी में विभिन्न स्वंय सहायता समूहों द्वारा बनाये गए सुंदर उत्पादों को देख कर महिलाओं को बहुत प्रेरणा मिली।

महिलाओं को चीड़ की पत्तियों से उत्पाद बनाने की उत्सुकता बढ़ गयी और इन्होने अपने आजीविका वर्धन के लिए इसे माध्यम बनाया।

समूह की महिलाओं द्वारा आय सृजन गतिविधि व्यापार योजना में चीड़ के उत्पादों को बनाने का आग्रह किया। जिसके तहत समूह की महिलाओं को पाइन सुई हस्तकला का पांच दिवसीय कौशल आधारित प्रशिक्षण दिनांक 23 मार्च से 27 मार्च 2023 तक परियोजना के माध्यम से निशु पार्नु वार्ड में ही दिया गया।

इस प्रशिक्षण के समापन पर उप–अरण्यपाल वन मंडल अधिकारी श्री वासु डोगर दवारा निरीक्षण एवं महिलाओं द्वारा बनाये गए सुंदर उत्पादों की सराहना की गई और इनके प्रचार प्रसार को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं को बाज़ार में गुणवत्ता वाले प्राकृतिक उत्पादों को बनाने और बेचने की सलाह दी गयी जिससे महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा।

इस समूह द्वारा आई आई टी कमांद मंडी में भी इन चीड़ के विभिन्न उत्पादों का स्टाल लगाया गया जिससे महिलाओं को लगभग 5000 रु की आमदनी प्राप्त हुई।

अब महिलाएं आर्डर पर चीड़ के सुंदर–सुंदर उत्पाद बना के बेच रही हैं। समूह की प्रधान द्रोमती का कहना है की जाइका परियोजना द्वारा हमें अपने घर द्वार पर ही स्वरोजगार दिया गया जिससे हम आत्मनिर्भर बन रहे हैं।

–जतिन शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (वानिकी और जैवविविधता)
–वन मंडल मण्डी–

बाढ़ू बाड़ा देव समूह के लिए टौर बना आय का साधन

वैसे तो रोजगार के बड़े साधन होते हैं, परन्तु कभी किसी ने यह नही सोचा कि टौर के पत्ते का नवीनीकरण करके उसे रोजगार का साधन बना सकते है, यानि पत्ता भी आय का साधन बन सकता है। यह सब सनीहन के बाढ़ू बाड़ा देव समूह की 14 महिलाओं ने कर दिखाया। जिन्होंने टौर के पत्तों का नवीनीकरण करके पत्तल बना कर उसे रोजगार के रूप में अपनाया। इन महिलाओं को विकास की धारा से जोड़ने के लिए जा जाइका परियोजना ने बहुत सहायता की। जाइका परियोजना के अधिकारी जब इस VFDS कमेटी की Microplan के लिए PRA कर रहे थे तब उन्होंने देखा की यहाँ टौर के पौधे बहुतयात मात्रा में पाए जाते है। टौर के पत्तों के लाभ के बारे में लोगों को समझाया। कुछ महिलाएं टौर की साधारण पारम्परिक पत्तल बना कर बेचती थी जिससे उनको अच्छा दाम नहीं मिलता था। परियोजना के अधिकारियों ने इस कमेटी की कुछ महिलाओं को इक्कठा कर के टौर के पत्तों के नवीनीकरण के बारे में जानकारी दी कि किस तरह से पारम्परिक पत्तल को मशीन द्वारा एक थाली या प्लेट के रूप में बना कर उसे अच्छे दामों में बेच सकते है। जहाँ साधारण पत्तल 1 रुपय की बिक रही है वहीं मशीन द्वारा थालीनुमा बना कर उसे अच्छे दामे में बेचा जा सकता है। बस फिर क्या था 14 महिलाओं ने एक समूह का गठन किया जिसका नाम बाढ़ू बाड़ा देव समूह रखा। इस समूह को बैंक के साथ जोड़ा और पंचसूत्र का पालन किया गया। उनकी यह लग्न देख कर परियोजना द्वारा एक पत्तल बनाने की मशीन दी गयी जिसका 75% अंशदान परियोजना द्वारा दिया गया, शेष 25% अंशदान समूह द्वारा दिया गया। यह मशीन डबल सांचे वाली है जिसमें पत्तल के साथ डोना भी तैयार किया जाता है। मशीन लगने से इन महिलाओं का उत्साह बढ़ गया। अब ये पूरी मेहनत से काम कर रही है और अच्छा लाभ कमा रही है। अब इस समूह की महिलाओं को पत्तल बनाने के दूर–दूर से भी आर्डर मिल रहे हैं।

अंत में यही कहा जा सकता है कि टौर पत्तों ने इन महिलाओं को घर द्वार रोजगार प्रदान किया। समूह की महिलाएं जाइका परियोजना का धन्यवाद करती हैं। जिन्होंने उन्हें रोजगार का साधन प्रदान किया। भविष्य में यही महिलाएं इस से अपनी आजीविका को और अधिक बढ़ाएंगी।

–सुनीता कुमारी,
क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक,
–कांगू वन मंडल सुकेत–

ग्राम वन विकास समिति "मझोटली"

JICA द्वारा वित्त पोषित हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना के माध्यम से मझोटली वार्ड समुदाय ने ग्राम वन विकास समिति "मझोटली" के सहयोग से एक पानी के टैंक का निर्माण सफलतापूर्वक पूरा किया। इसका उद्देश्य पानी की कमी को दूर करना और स्थानीय समुदाय के लिए एक स्थायी जल स्रोत प्रदान करना है। टैंक का निर्माण ₹100,000/ की लागत से वर्ष 2023 में पूरा हुआ।

मझोटली वार्ड पानी की कमी की समस्या का सामना कर रहा था, जिससे इसके निवासियों का दैनिक जीवन और कृषि गतिविधियाँ प्रभावित हो रही थीं। पानी की उपलब्धता के महत्व को पहचानते हुए, वानिकी परियोजना के सहयोग से एक टैंक के निर्माण में समुदाय ने समर्थन किया। जल टैंक को वर्षा जल को एकत्र करने और संग्रहीत करने के लिए डिजाइन किया गया, जो विभिन्न उद्देश्यों के लिए एक विश्वसनीय जल स्रोत है।

मझोटली वार्ड समुदाय के सहयोगात्मक प्रयासों और जाइका वानिकी परियोजना के सहयोग से, पानी के टैंक का निर्माण सफलतापूर्वक पूरा हो गया।

टैंक ने जल संसाधनों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने वर्षा जल को प्रभावी ढंग से एकत्र किया और संग्रहीत किया, जिससे शुष्क मौसम के दौरान एक स्थायी जल स्रोत सुनिश्चित हुआ। इस संरक्षण उपाय ने बाहरी जल स्रोतों पर समुदाय की निर्भरता को कम किया और कुशल जल प्रबंधन को बढ़ावा दिया। जल टैंक

निर्माण परियोजना के पूरा होने से मझोटली वार्ड के निवासियों के लिए जल उपलब्धता में उल्लेखनीय सुधार हुआ। संग्रहीत जल पीने और पशुधन पालन सहित विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करता है। आसानी से उपलब्ध पानी ने समुदाय की दैनिक गतिविधियों और समग्र कल्याण पर सकारात्मक प्रभाव डाला।

पानी की टंकी के निर्माण ने मझोटाली वार्ड को दीर्घकालिक जल सुरक्षा प्रदान की। विश्वसनीय जल स्रोत ने समुदाय की दैनिक जरूरतों के लिए पानी तक निर्बाध उपलब्धता सुनिश्चित की, जिससे उनके जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हुई।

जल संरक्षण और टिकाऊ संसाधन प्रबंधन पर परियोजना के प्रयासों ने पर्यावरण संरक्षण में योगदान दिया। बाहरी जल स्रोतों पर निर्भरता कम करके, परियोजना ने प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद की।

JICA के सहयोग से वानिकी परियोजना के तहत पानी के टैंक निर्माण से मझोटली वार्ड में पानी की उपलब्धता और स्थिरता में काफी सुधार हुआ है।

ग्रामीणों के लिए प्राकृतिक जल स्रोत उपयोगी हैं जो धरती से प्राप्त होते हैं। यह प्राकृतिक जलस्रोत 100 वर्ष पुराना है। इस प्राकृतिक जल स्रोत से वार्ड के सभी लोग लाभान्वित हो रहे हैं, जिसे परियोजना के तहत इस प्राकृतिक जल स्रोत को संरक्षित किया गया है।

–रेखा काल्टा,
क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक, चौपाल
–वन मंडल चौपाल–

चौपाल में जल संरक्षण से जल सुरक्षा

ग्राम वन विकास समिति "बग्गी"

जाइका अन्तराष्ट्रीय सहयोग एजेन्सी के समर्थन से वानिकी परियोजना (पी एफ आई एच पी एफ ई एम एंड एल) के तहत, बग्गी वार्ड समुदाय ने ग्राम वन विकास समिति "बग्गी" के सहयोग से एक जल संरचना बावड़ी का निर्माण सफलतापूर्वक ₹100,000/– की लागत से वर्ष 2023 में पूरी हुई। इस परियोजना का उद्देश्य पानी की कमी को दूर करना और स्थानीय समुदाय के लिए एक स्थायी जल स्रोत प्रदान करना है।

बग्गी वार्ड के निवासियों को पानी की कमी की समस्या का सामना हर वर्ष करना पड़ता है। इसके कारण ग्राम निवासियों की दैनिक और कृषि गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं। पानी की उपलब्धता के महत्व को पहचानते हुए, बग्गी वार्ड के निवासियों ने एचपी जाइका वानिकी परियोजना के सहयोग से एक बावड़ी का निर्माण करने का निर्णय लिया। प्राकृतिक जल स्रोत के पानी को संग्रहीत करने के लिए 500 लीटर पानी भण्डारण क्षमता वाली बावड़ी निर्माण के लिए बावड़ी का डिजाइन बनाया, जो विभिन्न उद्देश्यों में पानी आपूर्ति के लिए एक विश्वसनीय जल स्रोत है। बग्गी वार्ड के समुदाय के सहयोगात्मक प्रयासों और एचपी वानिकी परियोजना के समर्थन से बावड़ी का निर्माण सफलतापूर्वक पूरा हो गया।

बावड़ी ने जल संसाधनों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने वर्षा जल को प्रभावी ढंग से एकत्र किया और संग्रहित किया, जिससे शुष्क मौसम के दौरान एक स्थायी जल स्रोत सुनिश्चित हुआ। इस संरक्षण उपाय ने बाहरी जल स्रोतों पर समुदाय की निर्भरता को कम किया और कुशल जल प्रबंधन को बढ़ावा दिया।

बावड़ी निर्माण के पूरा होने से बग्गी वार्ड के निवासियों के लिए जल उपलब्धता में उल्लेखनीय सुधार हुआ। संग्रहित जल, पीने और पशु पालन सहित विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करता है। आसानी से उपलब्ध पानी ने समुदाय की दैनिक गतिविधियों और समग्र कल्याण पर सकारात्मक प्रभाव डाला।

बावड़ी निर्माण की सफलता में ग्राम समिति के निवासियों ने सामुदायिक भूमिका निभाई। बग्गी वार्ड समुदाय, वीएफडीएस बग्गी के साथ, बावड़ी की योजना, कार्यान्वयन और रखरखाव में सक्रिय रूप से भूमिका निभाई। इस सहभागी दृष्टिकोण ने लाभार्थियों के बीच स्वामित्व और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दिया।

बावड़ी के निर्माण से बग्गी वार्ड को दीर्घकालिक जल सुरक्षा प्रदान की। विश्वसनीय जल स्रोत ने समुदाय की दैनिक जरूरतों के लिए पानी तक निर्बाध पहुंच सुनिश्चित की, जिससे उनके जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हुई। पानी की बेहतर उपलब्धता ने बग्गी वार्ड में कृषि गतिविधियों पर सकारात्मक प्रभाव डाला। किसान कुशल सिंचाई का अभ्यास कर सकते हैं, जिससे फसल की पैदावार में वृद्धि होगी और कृषि उत्पादकता में सुधार होगा। इससे खाद्य सुरक्षा और आर्थिक कल्याण में योगदान मिला। बावड़ी से पशुपालकों को लाभ हुआ। उनके पशुओं के लिए पानी तक पहुंच ने उनकी भलाई सुनिश्चित की और उत्पादकता में वृद्धि की, जिससे पशुधन पर निर्भर परिवारों की आजीविका में सुधार हुआ।

जल संरक्षण और टिकाऊ संसाधन प्रबंधन पर परियोजना के प्रयासों ने पर्यावरण संरक्षण में योगदान दिया। बाहरी जल स्रोतों पर निर्भरता कम करके, परियोजना ने प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद की।

परियोजना के सहयोग से बावड़ी निर्माण से बग्गी वार्ड में पानी की उपलब्धता और स्थिरता में काफी सुधार हुआ है। ग्राम वन विकास समिति बग्गी के समुदाय और हितधारकों के सहयोगात्मक प्रयासों ने ग्राम निवासियों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है।

किरण माला
क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक, बल्द्वाड़ा
वन मंडल सुकेत

वन मंडल सुकेत को मिला सामुदायिक भवन

ग्राम वन विकास समिति "घनेहरा"

घनेहरा ग्राम पंचायत दसेहरा का वार्ड है। इस वार्ड के साथ बैरकोट जंगल लगता है। जब जाइका वानिकी परियोजना बल्द्वाडा वन परिक्षेत्र मे बैच–II में चलाई गई तो चयन मानदंड के अनुसार इस वार्ड का चयन भी हुआ। वार्ड में 145 परिवार हैं। जिन में से 135 परिवार परियोजना

के साथ जुड़ें हैं। इस वार्ड में ग्राम वन विकास समिति "घनेहरा" का गठन परियोजना स्टाफ व वर्ष 2021–22 में परियोजना द्वारा सामुदायिक कार्य के तहत पांच लाख की राशि ग्राम वन विकास समिति, घनेहरा को जारी की गयी जिससे समुदायिक भवन का निर्माण कार्य करवाया गया। अब समिति की मासिक बैठक व गाँव की अन्य सार्वजनिक बैठक भी यहाँ पर करवाई जाती हैं। लोगों द्वारा इसमें अंशदान के द्वारा अपनी भागी दारी भी जताई गयी। लोंगो ने परियोजना का धन्यवाद जताया है।

–किरण माला,
क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक, बल्द्वाड़ा
–वन मंडल सुकेत–

ग्राम वन विकास समिति "दयोला"

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत सुकेत वन मण्डल में जयदेवी वन परिक्षेत्र की ग्राम वन विकास समिति, दयोला में एक सामुदायिक भवन का निर्माण किया गया है। इस भवन का निर्माण ग्राम वन विकास समिति के प्रधान श्री यशपाल शर्मा जी की भूमि पर किया गया है। जिसको उन्होने पहले समिति के नाम करवाया और बाद में उस भूमि पर सामुदायिक भवन का निर्माण किया। इस भवन निर्माण में 500000 रु जाइका परियोजना द्वारा दिये गए तथा 10% की हिस्सेदारी स्थानीय लोगों की रही। इस भवन के निर्माण से लोगों को काफी फायदा होगा। समिति इस भवन को छोटे मोटे धार्मिक कार्यों में किराए पर देकर इससे आय अर्जित कर सकती है या फिर ग्राम वन विकास समिति का कार्यालय खोल सकती है। इस

प्रकार ग्राम वन विकास समिति के साथ साथ स्थानीय लोगों को भी काफी फायदा होगा।

–वनीता कुमारी
क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक, जयदेवी
–वन मंडल सुकेत–

नाचन वन मण्डल में हो रहे आजीविका वर्धन कार्य

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन तथा आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित् पोषित) के कार्य नाचन वन मण्डल में वर्ष 2018 से शुरू हुए है। इस परियोजना के अन्तर्गत नाचन वन मण्डल के वन परिक्षेत्र नाचन शामिल है।

परियोजना के प्रथम चरण में नाचन वन परिक्षेत्र में कार्य प्रस्तावित क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस में पांच वन ग्राम विकास समितियों का गठन किया गया, इसके बाद परियोजना के स्टाफ के मार्गदर्शन में ग्राम वन विकास समिति द्वारा सूक्ष्म योजना तैयार की गयी। जिसकी स्वीकृति वन मण्डलाधिकारी नाचन द्वारा प्रदान की गयी। इस सूक्ष्म योजना में दर्शाए गये कार्यों का कार्यान्वयन सम्बंधित समिति के द्वारा (जिसमें पौधरोपण 50 हेक्टेयर में लोगों की भागीदारी से सांझा वन प्रबंधन, PFM और 50 हेक्टेयर में विभाग द्वारा) किया गया। इसके साथ अन्य आजीविका सुधार के कार्य किये गए, जिसमें मशरूम उत्पादन, आचार बनाना, मूल्यवर्धन, आदि आजीविका वर्धन गतिविधियाँ शामिल है।

आजीविका सुधार कार्यक्रम

वन प्रभाग और वन परिक्षेत्र नाचन में गठित ग्राम वन विकास समिति "सतयोग" के स्वयं सहायता समूह जय देव बन्यूरी और ग्राम वन विकास समिति सैंज के स्वयं सहायता समूह जय कश्मीरी माता को खाद्य प्रसंस्करण

(आचार और चटनी) का प्रशिक्षण (20–26/05/2022) दिया गया। साथ ही उन्हें संगठित रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया। प्रशिक्षण के उपरांत समूह द्वारा बनाये गये विभिन प्रकार के आचार बाज़ार में बिकने के लिए तैयार है। इस से समूह के सदस्यों के आत्मविश्वास को नयी ऊर्जा मिली है, तथा "जय देव बन्यूरी" स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने 70000 रूपए और स्वयं सहायता समूह जय कश्मीरी माता के सदस्यों ने 54200 रूपए का आचार बाज़ार में बेचा।

जय देव बन्यूरी, स्वयं सहायता समूह, सतयोग

क्रमांक	सदस्यों की संख्या	कुल व्यय	कुल आय	लाभांश
1	10	35500	70000	34500

जय कश्मीरी माता, स्वयं सहायता समूह, सैंज

क्रमांक	सदस्यों की संख्या	कुल व्यय	कुल आय	लाभांश
1	10	30500	54200	23700

2. जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए कई कदम उठाये जा रहे है। परियोजना के सहयोग से नाचन वन मंडल के ग्राम वन विकास समिति "सैंज" में शैलपुत्री स्वयं सहायता समूह तथा ग्राम वन विकास समिति "दारी" की महिलाओं को मशीन बुनाई का 15 दिनों प्रशिक्षण हिल टॉप संस्था के सहयोग से दिया गया। यह कार्यक्रम परियोजना के आजीवका सुधार घटक के अन्तर्गत किया जा रहा है। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात कार्य में निपुणता हासिल करने के बाद ग्राम वन विकास समिति "दारी" की सदस्य सरिता देवी अब हिलटॉप संस्था के साथ मिलकर अन्य जगहों पर मशीनी बुनाई का प्रशिक्षण देती है तथा स्वेटर जुराबों की बुनाई करके इसे अपनी आजीविका बढ़ाने का एक अतिरिक्त माध्यम बनाया है।

3. जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए,परियोजना के सहयोग से नाचन वन मंडल के सतयोग ग्राम वन विकास समिति में स्वयं सहायता समूह तथा ग्राम वन विकास समिति दारी की महिलाओं को मशरूम की खेती का 3 दिवसीय उच्चतर प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से दिया गया, जिसके बाद सदस्य बटन और ढींगरी (ऑयस्टर) मशरूम के बैग लगा कर अपनी आजीविका वर्धन कर रहे है। यह कार्यक्रम परियोजना के आजीवका सुधार घटक के अन्तर्गत किया जा रहा है। प्रशिक्षण के उपरांत समूह के सदस्यों को नयी ऊर्जा मिली है, तथा उन्होंने 21000 रूपए के मशरूम बाजार में बेचे।

–दीपिका गुलेरिया
विषय वस्तु विशेषज्ञ (वानिकी और जैवविविधता)
–वन मंडल नाचन–

457 ग्राम वन विकास समितियां

प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चौथे चरण की 457 ग्राम वन विकास समितियों व जैव–विविधता प्रबन्धन समितियों उप समितियों के चयन की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। 457 वी0एफ0डी0एस0, 22 वन मण्डलों के 72 वन परिक्षेत्रों व 5 वन्यप्राणी परिक्षेत्रों के सम्बन्धित वार्डों की ग्राम वन विकास समितियों व जैव विविधता प्रबन्धन समिति उप समितियों का गठन हो चुका है और 431 वन विकास समितियों की सूक्ष्म योजनाऐं तैयार हो चुकी हैं। 26 ग्राम वन विकास समितियों के सूक्ष्म योजनाएं तैयार करने हेतु सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन की प्रक्रिया आरम्भ की गई है।

प्रदेश में 764 स्वयं सहायता समूह

मीडिया में प्रोजेक्ट गतिविधियाँ

अब पांच महीने तक खराब नहीं होंगी टौर के पत्तों की पत्तल

"...महिलाएं अपनी आर्थिकी सुदृढ़ कर सकें। जाइका परियोजना की तरफ महिलाओं को प्रशिक्षण देने के अलावा मशीन भी उपलब्ध करवाई गई है।" —जितेन शर्मा, एसएमएस, जाइका, वन मंडल मंडी

टौर के पत्ते में कई औषधीय गुण हैं। हिमाचल में टौर पत्ते समुद्र तल से 1,500 मीटर ऊंचाई वाले क्षेत्रों में मिलता है। अब 2,000 मीटर ऊंचाई तक मिल रहा है।

कठोगण में नए विकास कार्यों का शुभारंभ

460 सूक्ष्म योजनाएं धरातल पर की जाएंगी कियान्वित : गुलेरिया

शिमला, 25 मई (भूपिन्द्र): वन विभाग में जायका वित्तपोषित वानिकी और एन.आर.एम. परियोजना के तहत वित्त वर्ष 2023-2024 के अंत तक 460 सूक्ष्म योजनाएं धरातल पर कार्यान्वित की जाएंगी। परियोजना के अंतर्गत लोगों की आर्थिकी में सुधार के लिए स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से लगभग 24 आय सृजन गतिविधियां चलाई जा रही हैं, जिनमें से कुछ गतिविधियां अन्य विभागों के साथ कन्वर्जेंस के माध्यम से चलाई जा रही हैं। यह बात अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने शिमला में आयोजित की जा रही जायका परियोजनाओं की 12वीं वार्षिक कार्यशाला के दूसरे दिन देश के विभिन्न स्थानों से आए प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कही।

जायका अधिकारियों की स्वयं सहायता समूह सदस्यों संग बैठक

स्टाफ रिपोर्टर–रामपुर बुशहर

जड़ी बूटियों के उत्थान के लिए उठाए जा रहे कदम

मुख्य परियोजना निदेशक जायका वानिकी परियोजना के नागेश कुमार ने किया सीएसआईआर का दौरा

दिव्य हिमाचल ब्यूरो– पालमपुर

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक जायका वानिकी परियोजना के नागेश कुमार गुलेरिया ने सोमवार के दिन सीएसआईआर हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर का दौरा किया। इस मौके पर उन्होंने संस्थान के निदेशक डा. सुदेश कुमार यादव से मुलाकात की और जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ द्वारा तैयार किए गए औषधीय पौधों के प्रसार मॉडलों को आईएचबीटी के सहयोग से परियोजना क्षेत्र में जमीनी स्तर पर सफलतापूर्वक उतारने के बारे में बातचीत की। जायका वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक ने बताया ... विकास समितियों व जैव विविधता समितियों के माध्यम से जड़ी-बूटियों के पु... दिशा में अ... रहे हैं। ... वृद्धि के साथ-साथ इन लोगों आजीविका में वृद्धि हो सके।

दैनिक जागरण 25 MAY

आजीविका सुदृढ़ीकरण में औषधीय पौधों की खेती महत्वपूर्ण

पालमपुर, 19 जून (भूपि): अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक जायका वानिकी परियोजना नागेश कुमार गुलेरिया ने सी.एस.आई.आर.-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर का दौरा किया। उन्होंने संस्थान के निदेशक डा. सुदेश कुमार यादव से भेंट की तथा औषधीय पौधों के प्रसार मॉडलों को लेकर बातचीत की। उन्होंने बताया कि जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ द्वारा ग्राम वन विकास समितियों व जैव विविधता समितियों के माध्यम से जड़ी-बूटियों के पुनस्थान व संवर्धन की दिशा में अनेक पग उठाए जा रहे हैं। यह प्रकोष्ठ ग्रामीण लोगों को वन ...

पालमपुर : अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल, आई.एच.बी.टी. के निदेशक व अन्य सामूहिक चित्र में।

न्यूज ब्रीफ

वन रक्षकों ने जानी जायका वानिकी परियोजना की भूमिका

शिमला, 10 जुलाई (अम्बादत): वन मंडल शिमला, ठियोग व चौपाल के वन रक्षकों ने जायका वानिकी परियोजना की भूमिका के बारे में जानकारी प्राप्त की। जायका वानिकी परियोजना की एकदिवसीय कार्यशाला कृषि सहकारी कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान सांगटी समरहिल में संपन्न हुई। कार्यशाला की अध्यक्षता अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने की। इस कार्यशाला का आयोजन शिमला, चौपाल, ...

अधिकारियों ने विकास कार्यों का लिया जायजा

वन एवं जायका परियोजना अधिकारियों ने कठोगण का किया दौरा

संवाद न्यूज एजेंसी

... परिक्षेत्र सरकाघाट में ग्रामीण वन विकास समिति के कार्यों का वन एवं जायका परियोजना अधिकारियों ने निरीक्षण किया। विकास समिति के प्रधान पवन कुमार ने बताया कि निरीक्षण के लिए ड्रीम डोर प्रोडक्शन टीम शिमला ने पौधरोपण की ड्रोन की ओर से वीडियोग्राफी की गई। इसके ... प्रधान पवन ठाकुर ने गांव के विकास कार्यों को नई दिशा देने के लिए वन एवं परियोजना अधिकारियों और स्टाफ का समस्त ग्रामीणों की ओर से आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर परियोजना अधिकारी वेद प्रकाश पठानिया, ...

हिमाचल — दैनिक जागरण www.jagran.com

नर्सरी में पहली बार टौर के पौधे तैयार

कमांद में जाईका प्रोजेक्ट के तहत 50,000 पौधे तैयार करने का लक्ष्य

हुक्मेंद्र शर्मा • मंडी

- स्वयं सहायता समूहों की सदस्य निजी भूमि में लगाएंगी पौधे, साल बाद किए जाएंगे वितरित
- पत्तों से पत्तल-प्लेट बनाकर आर्थिकी करेंगी मजबूत, साल तक खराब नहीं होती हैं प्लेट

वन विभाग की नर्सरियों में टौर (बायुहीनिया वैहली) के पौधे तैयार किए जा रहे हैं। जंगल से 30 किलो टौर का बीज एकत्र कर कमांद स्थित नर्सरी में पहले साल करीब 50,000 टौर के पौधे तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है। करीब एक साल बाद नर्सरी में तैयार इन पौधों को जाईका प्रोजेक्ट के तहत स्वयं सहायता समूह की सदस्यों को वितरित किया जाएगा। टौर के पत्तों की पत्तल या फिर प्लेट तैयार कर महिलाएं पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने के साथ-साथ अपनी आर्थिकी को मजबूत करेंगी। हिमाचल में धाम टौर की पत्तल में परोसी जाती है।

टौर की पत्तल या प्लेट को प्लास्टिक प्लेट के विकल्प के रूप में बाजार में उतारा जाएगा। टौर के पत्तों का औषधीय महत्व भी है। शादियों में धाम टौर के पत्तल में परोसी जाती है, लेकिन अब प्रदेश में टौर प्रजाति के पौधे बहुत कम रह गए हैं। अब ... पौधों को बढ़ाने के ...

टौर के पत्तों से तैयार प्लेट। (दाएं) कमांद में वन विभाग की नर्सरी ...

महिलाओं को दिया जा रहा प्लेट बनाने का प्रशिक्षण

टौर के पत्तों से यूं तो पत्तल बनाई जाती है, लेकिन जाईका प्रोजेक्ट के तहत महिलाओं को इन पत्तों से प्लेट बनाने का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मशीन की मदद से पत्तों की प्लेट तैयार की जा रही है। यह प्लेट करीब एक साल तक इस्तेमाल में ...

जड़ी बूटियों के संवर्धन के लिए किया जा रहा काम

संवाद सहयोगी, पालमपुर : अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाईका वानिकी परियोजना), नागेश कुमार गुलेरिया ने सोमवार को सीएसआइआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर का दौरा किया।

इस मौके पर उन्होंने संस्थान के निदेशक डा. सुदेश कुमार यादव से मुलाकात की और जड़ी बूटी ... उत्थान व संवर्धन की दिशा में ... कदम उठाए जा रहे हैं। यह ... ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले ... और स्थानीय ... कर रहा है तथा तकनीकी जानकारी उपलब्ध करवा रहा है। डा. सुदेश कुमार यादव ने जाईका वानिकी परियोजना की ओर से औषधियों ... जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिकों के माध्यम से हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। इस अवसर पर वन विभाग के ...

सीएसआइआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में जाईका परियोजना निदेशक व अन्य अधिकारी • जागरण

हिमाचल को हरित राज्य बनाना सरकार का उद्देश्य : सुक्खू

हरित आवरण बढ़ाकर 30 प्रतिशत करने का लक्ष्य : सीएम

कहा-जाईका परियोजना के माध्यम से विकसित होंगे गुणवत्तापूर्ण प्रजातियों के 60 लाख पौधे

15 इलेक्ट्रिक बसों को दिखाई हरी झंडी

वन उच्च अधिकारियों से मिला खाद्य और भूमि उपयोग गठबंधन के प्रतिनिधिमंडल

जाइका वानिकी परियोजना की कार्यशाला में कर्मचारियों को किया जागरूक

स्टाफ रिपोर्टर—शिमला

जाइका वानिकी परियोजना की एकदिवसीय कार्यशाला ... सहकारी कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान सांगटी समरहिल में ... कार्यशाला की अध्यक्षता ... प्रधान मुख्य अरण्यपाल ... परियोजना निदेशक ... गुलेरिया ने की। इस कार्यशाला ... शिमला व रामपुर ... कार्यरत वन खंडाधिकारियों के लिए किया गया। इस ... कर्मचारियों को परियोजना से संबंधित विस्तृत जानकारी ... नागेश कुमार गुलेरिया ने ... को परियोजना का ... उद्देश्य के बारे में जानकारी ... की। उन्होंने प्रशिक्षुओं ... करते हुए कहा कि ... आसपास रहने वाले लोगों से आत्मीयता बढ़ानी पड़ेगी, जिससे की ग्रामीण लोग स्वतः ही प्रदेश ...

हिमाचल को हरित राज्य बनाना सरकार का उद्देश्य : सुक्खू

- प्रदेश की 90 प्रतिशत आबादी किसी न किसी रूप में वनों पर निर्भर
- जाईका परियोजना के अंतर्गत ग्राम वन विकास समितियां पुरस्कृत

राज्य ब्यूरो, शिमला : मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने बुधवार को शिमला के होटल पीटरहाफ में जाईका पोषित वानिकी और एनआरएम परियोजना की तीन दिवसीय 12वीं वार्षिक कार्यशाला का धर्मशाला से वर्चुअली शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य हिमाचल को हरित राज्य बनाना ... लगभग 45 हजार हेक्टेयर भूमि पर पौधारोपण जैसे कार्य किए जा रहे हैं। प्रदेश में ईको टूरिज्म की अपार संभावना है। जाईका परियोजना ईको टूरिज्म के दृष्टिकोण से योगदान देने में सहायक हो सकती है। अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक नागेश ...

सुखविंदर सिंह • जागरण आर्काइव

Forest cover to be raised to 30%

TRIBUNE NEWS SERVICE

DHARAMSALA, MAY 24

Chief Minister Sukhvinder Singh Sukhu today said that the state government had kept a target of increasing the green cover in the state from 28 per cent to 30 per cent.

He said this while virtually addressing from here the 12th annual workshop on Japan International Cooperation Agency (JICA)-assisted forestry and natural resource ...

Chief Minister Sukhvinder Singh Sukhu virtually addresses the 12th annual workshop of JICA's NRM on Wednesday. ANI

SEVEN FOREST COMMITTEES HONOURED

... seven village ... under the ...

प्लास्टिक बैग की जगह कपड़े के बैग का करें प्रयोग : एंजेल शर्मा

हिमाचल दस्तक ब्यूरो | कुल्लू

- खल्याणी बाराहार स्कूल में जागरूक किए छात्र
- वन मंडल कुल्लू ने पर्यावरण संरक्षण को छेड़ा अभियान

खल्याणी बाराहार स्कूल में पर्यावरण संरक्षण पर आयोजित जागरूकता शिविर के दौरान मौजूद छात्र, अध्यापक व अन्य।

कपड़े के बैग उपयोग में लाने, पड़ोसियों के पास रसोई में बालन की जगह 100 प्रतिशत उज्ज्वला कलेक्शन का उपयोग, आसपास के ... इस जागरूकता शिविर में वन खंड अधिकारी देवेंद्र भंडारी, एसएमएस जायका अरविंद कुमार, जायका समन्वयक शशि शर्मा, तारा ...

2030 तक हिमाचल के ग्रीन कवर एरिया को 30 प्रतिशत बढ़ाने का लक्ष्य

हिमाचल में जायका परियोजना से विकसित होंगे गुणवत्तापूर्ण प्रजातियों के 60 लाख पौधे

नगर निगम शिमला में कांग्रेस ने 5 मनोनित पार्षदों को किया नियुक्त

जाइका वानिकी परियोजना की एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

सवेरा ब्यूरो, शिमला : कृषि सहकारी कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान सांगटी समरहिल में जाइका वानिकी परियोजना की एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला की अध्यक्षता अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने की। इस कार्यशाला का आयोजन शिमला व रामपुर वन वृत में कार्यरत वनखंडाधिकारियो के लिये किया गया। इस कार्यशाला में उक्त कर्मचारियों को परियोजना से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी दी गई, जिसमें विभिन्न सत्र रखे गए जो कि विशेषज्ञों द्वारा संबोधित किए गए। नागेश कुमार गुलेरिया ने प्रशिक्षुओं को परियोजना का परिचय और उद्देश्य के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा कि वन क्षेत्रों के आसपास रहने वाले लोगों से आत्मीयता बढ़ानी पड़ेगी, जिससे की ग्रामीण लोग स्वतः ही प्रदेश के ग्रीन कवर को बढ़ाने में वन विभाग की मदद करेंगे। सेवानिवृत्त, हिमाचल वन सेवा अधिकारी वीपी पठानिया ने कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को उनकी जाइका वानिकि परियोजना में भूमिका के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। परियोजना कार्यक्रम प्रबंधक विनोद शर्मा ने स्वयं सहायता समूहो के लिए आय सृजन गतिविधि के चयन व इन समूहों द्वारा तैयार उत्पादो की रणनीति के बारे में जानकारी प्रदान की रीना शर्मा, विषय वस्तु विशेषज्ञ ने स्वयं सहायता समूह, ग्राम वन विकास समितियों, तकनीकी इकाई के बीच समन्वय के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर विभिन्न प्रतिभागियों ने फील्ड स्तर में हो रही गतिविधियों की जानकारी कार्यशाला में रखी औरपरियोजना को अधिक सुचारू बनाने के लिए अपने बहुमुल्य सुझाव सांझा किए।

FOLU India

@FOLUIndia · Following

We thank Additional Chief Secretary Mr. @ocsharma and Additional PCCF Mr. Nagesh Guleria IFS for an insightful discussion with @jayaharikm and @sonypadichal from @FOLUIndia on the roadmap for scaling up #sustainabledevelopment in the hill state of #HimachalPradesh.

You and 4 others

17:25 · 07 Jul 23 · 254 Views

औषधीय पौधों के प्रसार मॉडलों को जमीनी स्तर पर उतारने पर की चर्चा

हिमाचल दस्तक | पालमपुर

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल ने हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर का दौरा किया

FOLU हिमाचल में JICA के तहत ग्राम समुदायों का समर्थन करेगा

श्रेणी: वन एवं नदियाँ | प्रकाशित: 07 जुलाई 2023 | हिट्स: 117

लेखक: हिम्बुमेल समाचार सेवा

शिमला- खाद्य और भूमि उपयोग गठबंधन ने JICA परियोजना के तहत विभिन्न क्षेत्रों ... करने के लिए ओंकार शर्मा, प्रधान सचिव ... मुलाकात की।

उन्होंने REDD प्लस, सतत पारिस्थितिकी ... की आजीविका, बच्चों और गरीब ग्रामीण ... प्राकृतिक खेती प्रथाओं के साथ हिमाचल ... दिखाई।

प्रतिनिधिमंडल ने स्वैच्छिक आधार पर अपनी विशेषज्ञता की पेशकश की और रिपोर्ट तैयार करेगा और पारंपरिक उत्पादों के लिए ब्रांड निर्माण और मूल्य श्रृंखला में राज्य का समर्थन करेगा।

ओंकार शर्मा ने राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों, वन संसाधनों पर ग्रामीण समुदायों की निर्भरता और हरित आवरण बढ़ाने के सरकारी प्रयासों के बारे में जानकारी साझा की।

नागेश कुमार गुलेरिया ने हरित आवरण को बढ़ाने और वन-निर्भर समुदायों की आजीविका का समर्थन करने में जेआईसीए वानिकी परियोजना के काम का अवलोकन दिया।

प्रतिनिधिमंडल राज्य सरकार के विचार हेतु एक विस्तृत अवधारणा प्रस्ताव तैयार करेगा।

हिमाचल कैडर के पूर्व आईएएस अधिकारी श्री एस विजय कुमार इस संगठन का समर्थन करते हैं।

खल्याणी स्कूल में लगाया पर्यावरण जागरूकता शिविर

5 जून तक चलाया जाएगा अभियान

कुल्लू, 30 मई (धनी राम): जायका परियोजना द्वारा वन मंडल कुल्लू व क्षेत्रीय तकनीकी इकाई एवं वन परिक्षेत्र कुल्लू के सहयोग से राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला खल्याणी बाराहार में पर्यावरण पर जागरूकता शिविर लगाया गया। इसमें स्कूल के विद्यार्थी, स्कूल स्टाफ व ग्रामीणों को वनों को आग से बचाने व स्वच्छता में समुदाय की भागीदारी के बारे में जागरूक किया गया। यह जागरूकता अभियान वन विभाग कुल्लू के माध्यम से 5 जून तक चलाया जाएगा। वन परिक्षेत्र अधिकारी एंजल शर्मा ने कहा कि पर्यावरण 2023 का थीम लोगों को प्लास्टिक के उपयोग को छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा कि लोगों को प्लास्टिक बैग की जगह कपड़े के बैग उपयोग करने चाहिए। उन्होंने कहा कि पड़ोसियों के पास रसोई में बालन की जगह 100 प्रतिशत उज्ज्वला कनैक्शन का उपयोग हो और आसपास के स्थानों, कार्यालयों में वाहनों के उपयोग की बजाय पैदल चलने को बढ़ावा देना तथा स्थानीय समुदाय के साथ मिट्टी और नमी संरक्षण पहलुओं का आयोजन करना है। इस पर्यावरण शिविर में बी.ओ. देवेन्द्र भंडारी, एस.एम.एस. जायका अरविंद कुमार, जायका समन्वयक शशि शर्मा, तारा चंद, वन रक्षक परमजीत, स्कूल के प्रधानाचार्य व ग्राम वन विकास समिति बाराहार के प्रधान सुख राम व अन्य ग्रामीण मौजूद रहे।

उत्तम हिन्दू

जाइका वानिकी परियोजना की कार्यशाला 24 से

... शर्मा : जाइका द्वारा वित्तपोषित वानिकी और एनआरएम की 12वीं वार्षिक कार्यशाला का आयोजन 24 से 26 मई तक ...। इस तीन दिवसीय कार्यशाला में भारत सरकार के अधिकारी, ... और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, वित्त मंत्रालय में आर्थिक मामलों ...

CMO Himachal

3h

आज धर्मशाला से वर्चुअल माध्यम से शिमला में आयोजित जाइका की एनआरएम की 12वीं वार्षिक कार्यशाला को सम्बोधित किया। राज्य के हरित आवरण को 30 प्रतिशत तक बढ़ने के लिए हम जायका के माध्यम से प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण प्रजातियों के 60 लाख पौधे विकसित करेंगे।

#JICA
#NaturalResourceManagement
#greencover
#forestry
#dharmshala
#kangra
#SukhKiSarkar
#GovtOfHimachalPradesh

विस्तृत जानकारी के लिए संर्म्पक करें :.

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका वानिकी परियोजना

टुटू, शिमला–11 हिमाचल प्रदेश

दूरभाष: 0177-2838217, ई0 मेल: cpdjica2018hpfd@gmail.com

वेबसाइट: https://jicahpforestryproject.com

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाष:1902 -226636, ई0 मेल: -pdjicakullu@gmail.com

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, सामुदायिक एवं संस्था क्षमता उत्थान इकाई

जाईका वानिकी परियोजना, रामपुर दूरभाष: 01782-234689, ई0 मेल: -dpdrmp2018@gmail.com